हनुमानगढ़ जिले के बहुसंख्यक व अल्पसंख्यक संवर्ग के भावी अध्यापकों में राष्ट्रीय जागरूकता व जीवन मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन

अनिता कुमारी*

सारांश

भारतीय समाज प्राचीन समय से ही विविधताओं से परिपूर्ण रहा है। विद्यार्थी राष्ट्र के भावी कर्णाधार हैं। इनका नैतिक, मानसिक तथा शारीरिक विकास अध्यापक पर ही निर्भर करता है। वैदिक काल से ही यहां कर्म विभाजन की स्थिति पाई जाती है। परवर्ती काल में भारत में अनेक विदेशी जातियों, समूहों का आक्रान्ताओं के रूप से आगमन हुआ था। भारत का लिखित इतिहास बौद्ध काल से ही पाया जाता है। तत्कालीन साहित्य से प्रकट होता है कि उस समय समाज विभिन्न वर्गो में विभाजित हो चुका था और समाज का एक वर्ग दूसरे वर्ग को शंका की दृष्टि से देखने लगा था। इन सभी आने वाले आक्रान्ताओं ने यहीं वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित किये और फलस्वरुप नई जातियों, वर्ग समूहों का जन्म हुआ। जीवन में धारण किए गए मूल्य ही हमारे श्रेष्ठ चरित्र की निशानी है। यहां हनुमानगढ़ जिले के बहुसंख्यक व अल्पसंख्यक वर्ग के भावी अध्यापकों में राष्ट्रीय जागरूकता व जीवन मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन में अल्पसंख्यक व बहुसंख्यक वर्ग के भावी अध्यापकों के आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक मूल्य में सार्थक अन्तर पाया गया है, जबकि भावी अध्यापकों की राष्ट्रीय जागरूकता व सौन्दर्यात्मक मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

मुख्य शब्द : जीवन मूल्य, राष्ट्रीय जागरूकता, बहुसंख्यक व अल्पसंख्यक वर्ग, भावी अध्यापक

प्रस्तावना

आज का बालक कल का भविश्य होता है। इस सम्बन्ध में डी. एस. कोठारी (1964–66) ने अपनी रिपोर्ट में लिखा है कि यदि ''हमें भविश्य के भारत का निर्माण करना है तो हमें वर्तमान बालकों का गहन अध्ययन करना होगा। इस निमित्त उनकी विशिश्टताओं और भिन्नताओं को समझते हुए उन्हें राश्ट्रीय अपेक्षाओं के अनुकूल बनाना होगा।'' ऋग्वेद का पुरूष वैदिक काल का प्रत्यक्ष दृष्टान्त है। जहां उस विराट पुरूष के मुख से ब्राह्मण, भुजाओं से क्षत्रिय ओर जंघाओं से वैश्य और पैरों से शूद्रों की उत्पत्ति का वर्णन किया गया हैं। वास्तविक रूप से यहां से वर्ण भेद की परम्परा का आरम्भ होता है। यद्यपि यह कल्पना वर्ण पर आधारित थी और इसका आधार भी वैज्ञानिक था। लेकिन ज्यों ज्यों समय व्यतीत होता गया, यह वर्ण भेद जन्म आधारित हो गया और यहीं से समस्या का जन्म हुआ। भारत का लिखित इतिहास बौद्ध काल से ही पाया जाता है। तत्कालीन साहित्य से प्रकट होता है कि उस समय समाज विभिन्न वर्गो में विभाजित हो कर समाज का एक वर्ग दूसरे वर्ग को शंका की दृष्टि से देखने लगा था। परवर्ती काल में भारत में अनके विदेशी जातियों, समूहों का आक्रान्ताओं के रूप से आगमन हुआ था। इन सभी आने वाले आक्रान्ताओं ने यहीं वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित किये और नई जातियों, वर्ग समूहों का जन्म हुआ। कुछ ने अपनी अलग अलग सत्ता बनाए रखी, इसमें मुस्लिम वर्ग प्रमुख हैं। ये सभी यहां शासक बन कर आए और शासक व शासित में वर्ग भेद होना आवश्यक हो गया। इस प्रकार अल्पसंख्यक न केवल धर्म के आधार पर बल्कि जाति, भाषा और भौगोलिक आधार पर भी समझे जाते हैं।

अध्ययन की आवश्यकता व महत्व

हनुमानगढ़ जिले की जनसंख्या की दृष्टि से अल्पसंख्यक व बहुसंख्यक में विभाजित है। देश के प्रजातान्त्रिक लोकतन्त्र होने के कारण बहुत से कानून सख्ती से लागू नही किए जाते है। देश की वोट बैंक की राजनीति भी इस प्रकार व्यापक है कि भारतीय संस्कृति गंगा जमुनी तहजीब लिए हुए है। यहां न कोई अल्पसंख्यक है और ना ही कोई बहुसंख्यक। यदि हम वास्तविक उन्नति चाहते है तो हमें विद्यार्थियों में राष्ट्र के प्रति जागरूकता व नैतिक मूल्यों का विकास अनिवार्य है। अतः सभी अल्पसंख्यक व बहुसंख्यक वर्ग के बी.एड. छात्र–छात्राओं में अपने राष्ट्र के प्रति जागरूकता की सतत सत्ता बने रहना आवश्यक है। राष्ट्रीय जागरूकता व जीवन मूल्यों के अभाव में विकलांग बनकर रह जाती

*शोध अध्येता, टांटिया विश्वविद्यालय, श्री गंगानगर एवं व्याख्याता, श्री गुरु नानक खालसा शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, हनुमानगढ़ (राज.)

है। अतः इसमें निवास करने वाले सभी नागरिकों में जीवन मूल्यों की उपस्थिति नितान्त अनिवार्य है। वस्तुतः जीवन मूल्यों के अभाव में तो एक समृद्ध राष्ट्र की कल्पना भी दुष्कर हो जाती है। भारत में रहने वाले अल्पसंख्यकों एवं बहुसंख्यकों की राष्ट्र के प्रति क्या धारणा है?तथा उनके जीवन मूल्य क्या है? यह उनके सामाजिक वातावरण पर निर्भर करती है। वर्तमान में अल्पसंख्यकों की सामाजिक स्थिति में संतोषजनक वृद्धि हुई है। यह अध्ययन इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि यह देखा जा सकें अल्पसंख्यकों की राष्ट्रीय जागरूकता व उनके जीवन मूल्य बहुसंख्यकों से कितने व किस सीमा तक भिन्न हैं। आदि का अध्ययन इसलिये भी आवश्यक है। क्योंकि राष्ट्र के प्रति बालक की भावना बालक के व्यवहार व उनके जीवन मूल्य, उसके व्यक्ति व व्यवहार को प्रभावित करते है तथा समाज में उन्हें एक निश्चित सीमा पर प्रतिष्ठापित करने में सहायता करते है।

हमें वास्तविक प्रगति के लिए मानवीय मूल्यों की स्थापना के लिए सदैव प्रयत्नशील रहना होगा। जीवन में मूल्यों का विकास किसी विशेष स्तर में प्रारम्भ न होकर बालक के जन्म से ही होने लगता है। परन्तु मूल्यों पर उन गुणों का भी प्रभाव पड़ता है। जिन्हें बालक अपने वंशानुक्रम तथा वातावरण से साथ लेकर आता है। मूल्यों के विकास में वंशानुक्रम, पारिवारिक तथा सामाजिक पर्यावरण का अपना महत्वपूर्ण स्थान है। भारत में रहते हुए भी अल्पसंख्यकों की राष्ट्र के प्रति क्या भावना है तथा वह बहुसंख्यकों से किस प्रकार भिन्न है व उनके जीवन मूल्य किस प्रकार बहुसंख्यक छात्र–छात्राओं से भिन्न है। इस प्रकार का अध्ययन देखने पर शोध का अभाव पाया गया। इन्ही सब बातों को ध्यान में रखकर प्रस्तुत अध्ययन की समस्या का चयन किया जो अपने आप में अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

समस्या कथन

इस अध्ययन में शोध समस्या को अग्रांकित रुप में समझा गया है–''हनुमानगढ़ जिले के बहुसंख्यक व अल्पसंख्यक संवर्ग के भावी अध्यापकों में राष्ट्रीय जागरूकता व जीवन मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन।''

उद्देश्य

इस अध्ययन हेतु शोधकर्त्ती द्वारा निम्नांकित उद्देश्यों को निर्धारित किया गया है–

1. हनुमानगढ़ जिले के बहुसंख्यक व अल्पसंख्यक संवर्ग के भावी पुरुश अध्यापकों में राष्ट्रीय जागरूकता का अध्ययन करना।
2. जिले के बहुसंख्यक व अल्पसंख्यक वर्ग की भावी महिला अध्यापकों में राष्ट्रीय जागरूकता का अध्ययन करना।
3. बहुसंख्यक व अल्पसंख्यक संवर्ग के विद्यार्थियों के विभिन्न मूल्यों यथा– सैद्धान्तिक, आर्थिक, सौन्दर्यात्मक, राजनैतिक व धार्मिक मूल्यों का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएं

प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्त्ती ने निम्नलिखित परिकल्पना का निर्माण किया है–

1. हनुमानगढ़ जिले के बहुसंख्यक व अल्पसंख्यक संवर्ग के छात्रों में राष्ट्रीय जागरूकता में कोई अन्तर नहीं है।
2. जिले के बहुसंख्यक व अल्पसंख्यक वर्ग की छात्राओं में राष्ट्रीय जागरूकता में कोई अन्तर नहीं है।
3. हनुमानगढ़ जिले के बहुसंख्यक व अल्पसंख्यक वर्ग के विद्यार्थियों के सैद्धान्तिक मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. जिले के बहुसंख्यक व अल्पसंख्यक वर्ग के भावी अध्यापकों के आर्थिक मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
5. हनुमानगढ़ जिले के बहुसंख्यक व अल्पसंख्यक वर्ग के विद्यार्थियों के सौन्दर्यात्मक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
6. जिले के बहुसंख्यक व अल्पसंख्यक वर्ग के विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
7. हनुमानगढ़ जिले के बहुसंख्यक व अल्पसंख्यक संवर्ग के भावी अध्यापकों के राजनैतिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
8. जिले के बहुसंख्यक व अल्पसंख्यक वर्ग के विद्यार्थियों के धार्मिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श का चयन करने के लिए शोधकर्ता ने बी.एड. के चार शहरी महाविद्यालयों के 100 विद्यार्थियों पर अध्ययन किया है। प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता ने यादृच्छिक न्यादर्श का प्रयोग किया है।

शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षणात्मक शोध विधि का प्रयोग किया गया है।

प्रस्तुत अध्ययन में प्रस्तुत सांख्यिकी

प्रस्तुत शोध हेतु एकत्रित किये गये प्रदतों के विश्लेषण हेतु सामान्य विवरणात्मक सांख्यिकी का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्त्ती ने बी.एड. स्तर पर अध्ययनरत बहुसंख्यक व अल्पसंख्यक वर्ग के विद्यार्थियों की राष्ट्रीय जागरूकता के लिए स्वयं निर्मित प्रश्नावली व जीवन मूल्यों के लिए एस. पी.अहलुवालिया द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत ''अध्यापक मूल्य सूची'' का उपकरण के रूप में प्रयोग किया है।

अध्ययन के मुख्य निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध अध्ययन के निष्कर्ष निम्न प्रकार है–

1. अध्ययन से ज्ञात होता है कि हनुमानगढ़ जिले के बी.एड. स्तर पर अध्ययनरत् अल्पसंख्यक व बहुसंख्यक संवर्ग के छात्रों की राष्ट्रीय जागरूकता में कोई विशेष अन्तर नहीं पाया गया है।
2. बी.एड. स्तर पर अध्ययनरत् अल्पसंख्यक व बहुसंख्यक वर्ग की छात्राओं की राष्ट्रीय जागरूकता में कोई विशेष अन्तर नहीं पाया गया है।
3. बी.एड. स्तर पर अध्ययनरत् अल्पसंख्यक व बहुसंख्यक वर्ग के भावी अध्यापकों के सैद्धान्तिक मूल्य में सार्थक अन्तर पाया गया। अतः अल्पसंख्यक विद्यार्थियों की अपेक्षा बहुसंख्यक विद्यार्थियों का सैद्धान्तिक मूल्य के प्रति अधिक लगाव पाया गया है।
4. हनुमानगढ़ जिले के बी. एड. स्तर पर अध्ययरत् अल्पसंख्यक व बहुसंख्यक संवर्ग के भावी अध्यापकों के आर्थिक मूल्य में सार्थक अन्तर पाया गया। इस प्रकार अल्पसंख्यक विद्यार्थियों की अपेक्षा बहुसंख्यक विद्यार्थियों के आर्थिक मूल्य के प्रति अधिक लगाव पाया गया है। अतः इस परिकल्पना को अस्वीकार किया जाता है।
5. अध्ययन से ज्ञात होता है कि अल्पसंख्यक व बहुसंख्यक वर्ग के भावी अध्यापकों के सौन्दर्यात्मक मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
6. बी.एड. स्तर पर अध्ययनरत् अल्पसंख्यक व बहुसंख्यक वर्ग के विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्य में सार्थक अन्तर पाया गया है। अल्पसंख्यक विद्यार्थियों की अपेक्षा बहुसंख्यक विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्य के प्रति लगाव कम है। अतः यह परिकल्पना अस्वीकार की जाती है।
7. अध्ययन से ज्ञात होता है कि हनुमानगढ़ जिले के अल्पसंख्यक व बहुसंख्यक संवर्ग के भावी अध्यापकों के राजनैतिक मूल्य में सार्थक अन्तर पाया जाता है। बहुसंख्यक विद्यार्थियों की अपेक्षा अल्पसंख्यक विद्यार्थियों के राजनैतिक मूल्य के प्रति अधिक लगाव है। अतः यह परिकल्पना अस्वीकार की जाती है।
8. इस अध्ययन में अल्पसंख्यक व बहुसंख्यक वर्ग के भावी अध्यापकों के धार्मिक मूल्य में सार्थक अन्तर पाया गया है। बी.एड. स्तर पर अध्ययनरत् अल्पसंख्यक व बहुसंख्यक वर्ग के विद्यार्थियों के धार्मिक मूल्य के प्रति लगाव कम है। अतः इस परिकल्पना को अस्वीकार किया जाता है।

भावी शोध हेतु सुझाव

1. इस शोध में हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों को ही सम्मिलित किया गया है। जबकि भावी शोध में हिन्दी माध्यम के विद्यार्थी एवं अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की राष्ट्रीय जागरूकता का अध्ययन किया जा सकता है।
2. प्रस्तुत लघुशोध में हनुमानगढ़ जिले के बी.एड. शिक्षण महाविद्यालय में अध्ययनरत् भावी अध्यापकों को ही अध्ययन हेतु चयनित किया गया है। यदि अध्ययन को पूरे प्रांत को लेकर किया जाये तो इसकी सार्थकता और बढ़ जायेगी।
3. विभिन्न मूल्यों के अध्ययन के संबन्ध में अध्यापकों, अभिभावकों एवं शिक्षा विभाग से जुड़े अधिकारियों को भी अध्ययन का विषय बनाया जाये।
4. सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की राष्ट्रीय जागरूता का अलग–अलग तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
5. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के अध्यापकों को भी राष्ट्र के प्रति जागरूक रहना चाहिए। जिन मूल्यों को समाज एवं छात्र पसन्द करते है, उनका अध्ययन किया जाना चाहिए।

6. विद्यार्थियों के जीवन मूल्यों का ही अध्ययन ना किया जाये अपितु अध्यापक के मूल्यों का भी अध्ययन किया जा सकता है।
7. स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर के विद्यार्थियों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
8. मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन उच्च वर्ग, मध्यम वर्ग एवं निम्न वर्ग के लोगों पर भी किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

मुखर्जी, आर. के. (1964) कोटेड इन पाण्डे एंड मिश्रा 'मूल्य शिक्षण', आगराः विनोद पुस्तक मंदिर.

किरनपाल, प्रेम (1981). वैल्यूज इन एजूकेशन. नई दिल्लीः एनसीईआरटी.

सिद्दीकी, आफताब जाकिरा (2011). प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन. परिप्रेक्ष्य. वर्ष 18, अंक 2, अगस्त 2011.

पाण्डेय, आर. एस. एवं मिश्रा, के. एस. (2008). मूल्य शिक्षा. आगराः अग्रवाल पब्लिकेशन.

राय, वी. के. और राय, आर. पी. (2013). ग्रामीण–शहरी वित्तपोषित और स्ववित्तपोषित बी.एड. कॉलेजों के प्रशिक्षणार्थियों द्वारा व्यक्त मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन. परिप्रेक्ष्य. वर्ष 19, अंक 1, अप्रैल 2012.

राकेश राय और अनीता राय (2011). शिक्षक अध्यापकों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन–लिंग, क्षेत्र और संवर्ग के संदर्भ में. परिप्रेक्ष्य. वर्ष 18, अंक 3, दिसंबर 2011.

राकेश राय और अनीता राय (2012). पूर्व माध्यमिक स्तर के छात्रों के नैतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन–मॉरीशस एवं भारत के संदर्भ में. परिप्रेक्ष्य. वर्ष 19, अंक 1, अप्रैल 2012.

सोमनाथ सराफ (1999). एजुकेशन इन ह्यूमन वैल्यू, नई दिल्लीः विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा. लि.